an>

Title: Need to make mandatory for private T.V. channels to show advertisement on missing children.

श्री रमेश बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली) : महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान एक ज्वलन्त समस्या और एक सामाजिक बुराई, गुमशुदा लोग और गुमशुदा बच्चों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

महोदय, आज स्थिति ऐसी नहीं है, जैसे पहले बच्चे कुम्भ मेले या अन्य भीड़-भाड़ वाली जगहों पर गुम हो जाया करते थे। आज कई इस प्रकार के निरोह संगठित अपराध को अंजाम दे रहे हैं। ये लोग बच्चों को अगवा कर अवैध मानव व्यापार, उन्हें विक्लांग बनाकर उनसे भीख मंगवाकर, उनसे चोरी करवाना और बाल मजदूरी जैसे कार्यों में धकेल रहे हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि गायब बच्चों में 55 परसेन्ट लड़कियाँ होती हैं तथा लापता बच्चों में 45 परसेन्ट बच्चे कभी नहीं मिलते हैं। देश में लगभग एक लाख बच्चे हर वÂर्ष गायब हो जाते हैं। राजधानी दिल्ली में ही 18 बच्चे प्रतिदिन गायब होते हैं। यूनीसेफ के अनुसार भारत में तीन लाख भीख मांगने वाले बच्चे हैं। उधर पड़ोसी मुल्क चाइना जिसकी जनसंख्या बहुत है, लेकिन वहाँ केवल 10 हजार प्रतिवर्ष के करीब यह संख्या है। इस विÂषय पर सर्वोच्च न्यायालय भी कठोर टिप्पणी कर चुका है। कई बार राज्यों के डीजीपी और चीफ सेक्रेटरीज को तलब भी किया जा चुका है। दूसरी तरफ मानसिक बीमार होने के कारण बच्चे ही नहीं कुछ लोग भी गुम हो जाते हैं। गुम होने के कारण वे मिल नहीं पाते हैं। सरकार इसे कैसे गंभीरता से लेती है, आप भलीभांति जानते हैं। मैं इस गंभीर समस्या पर सभी संस्थाओं को अपनी जिम्मेदारी निर्धारित करने और अधिक संवेदनशील होने की आवश्यकता की तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

अब मैं मूल बात पर आता हूँ। इन गुमशुदा बच्चों या उनके परिवार की कंप्लेंट की जो ऐड दिखाई जाती है, वह केवल दूरदर्शन पर दिखाई जाती है, जो केवल इंटीरियर गांव में चलता है। लेकिन मेट्रोपोलिटन सिटी के अन्दर बच्चों से अवैध कार्य कराये जाते हैं और जो बच्चे वहां पर होते हैं, देश के अन्दर जितने भी प्राइवेट चैनल चल रहे हैं, सरकार द्वारा सभी निजी न्यूज चैनलों के लिए इस प्रकार के दिशा-निर्देश जारी किए जाएं, जिससे हर चैनल दिन में कम से कम 15 मिनट का समय तय करके, सरकार के आंकड़ों के अनुसार उन गुमशुदा बच्चों के चित्र प्रदर्शित करें और समाज को जानकारी दें, केवल दूरदर्शन के माध्यम से यह न किया जाए। वे गुमशुदा बच्चों का अनिवार्य विज्ञापन दिखायें ताकि वे भी समाज के प्रति अपनी जिम्मेवारी का ठोस परिचय दे सकें। हम सभी इस समस्या व सामाजिक बुराई को दूर करने के लिए आगे कदम बढ़ायें। आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।